इकाई 4 प्रणाली दृष्टिकोण

संरचना

4.0 उद्देश्य

4.1 परिचय

4.2 प्रणाली दृष्टिकोण

4.2.1 प्रणाली दृष्टिकोण की उत्पत्ति

4.2.2 ऐतिहासिक संदर्भ

4.3 सामान्य प्रणाली एवं प्रणाली दृष्टिकोण

4.3.1 सामान्य प्रणाली एवं प्रणाली दृष्टिकोण : अंतर

4.3.2 प्रणाली विश्लेषण : लक्षण की विशेषताएं

4.3.3 प्रणाली दृष्टिकोण : चिंता और उद्देश्य

4.4 प्रणाली विश्लेषण का व्युत्पन्न

4.4.1 राजनीतिक प्रणाली व्युत्पन्न :आगत–निर्गत व्युत्पन्न

4.4.2 संरचनात्मक–कार्यात्मक व्युत्पन्न

4.4.3 साइबरनोटिक्स व्युत्पन्न

4.5 प्रणाली सिद्धांत : एक मूल्यांकन

4.5.1 प्रणाली दृष्टिकोण की सीमाएं

4.5.2 प्रणाली दृष्टिकोण की शक्ति

4.6 सारांश

4.7 संदर्भ

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

यह इकाई तुलनात्मक सरकार और राजनीति, का प्रणाली दृष्टिकोण के माध्यम् से अध्ययन आधुनिक दृष्टिकोणों मे से एक है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपको निम्न को करने में सक्षम होना चाहिएः–

- प्रणाली दृष्टिकोण के अर्थ और विकास की व्याख्या करने में,
- एक प्रणाली का परिभाषित करने में।
- प्रणाली दृष्टिकोण के उद्देश्यों, विशेषताओं और तत्वों की व्याख्या करने में।
- राजनीतिक प्रणाली को अन्य सामाजिक प्रणालियों से अलग करने में।
- प्रणाली सिद्धांत को उसके उचित परिपेक्ष्य में मूल्यांकन करने में।

4.1 परिचय

तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में, राजनीतिक वैज्ञानिक राजनीतिक घटनाओं को समझाने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों और तरीको को अपनाते हैं। तुलनात्मक राजनीतिक के अध्ययन में उपयोग किए जाने वाले दृष्टिकोणो को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है,–पारंपरिक दृष्टिकोण और आधुनिक दृष्टिकोण। पारंपरिक दृष्टिकोण जिसमें विभिन्न राजनीतिक प्रणालियो में विद्यमान औपचारिक राजनीतिक संस्थाओं, संरचनाओं या एजेंसियों जैसे कि न्यायपालिका, विधायिका, नौकरशाही, राजनीतिक दलों, दबाव समूहों या किसी अन्य संस्था के अध्ययन पर जोर दिया जाता है, जो कि राजनीति में लगातार संलग्न रहते है। पांरपरिक दृष्टिकोण के प्रस्तावकों में प्राचीन और आधुनिक दोनों राजनीतिक चिंतक शामिल है जैसे – प्लेटो, अरस्तू, जेम्स ब्रायस, बेंटले, वाल्टर बैजहाट, हेराल्ड लास्की आदि। राजनीति के अध्ययन के लिए अन्य पारंपरिक दृष्टिकोण है, जिनमें दार्शनिक (जिसकी प्लेटो, अरस्तू आदि द्वारा वकालत की गई) ऐतिहासिक (जिसे मैकियावेली, सबाइन, मांटेस्क्यू, टोकेविले आदि द्वारा अपनाया गया), वैधानिक (जिसकी वकालत कॉलेरो, जीन बोडिन, थॉमस हॉब्स, जेरमी बेंथम, जॉन आस्टिन आदि ने की) और संस्थागत दृष्टिकोण शामिल है।

हालांकि, पारंपरिक दृष्टिकोणों में उनकी अंतर्निहित कमजोरी और सीमाएं है। वे इस अर्थ में भी मानकवादी और आदर्शवादी हैं कि उनके विश्लेषण में राजनीति के मूल्यों और मानदंडो पर अधिक जोर दिया गया। पारंपरिक दृष्टिकोण को भी संकीर्ण माना जाता है क्योंकि उनके विश्लेषण और विवरण मुख्य रूप से पश्चिमी राजनीतिक संस्थाओं और प्रणालियों के अध्ययन तक ही सीमित है। लेकिन, अपनी सीमाओं के बावजूद, ये दृष्टिकोण बीसवी सदी के मध्य तक काफी लोकप्रिय रहे। इस पृष्ठभूमि में, पारंपरिक दृष्टिकोणों की अंर्तनिहित कमजोरी को दूर करने के उद्देश्य से राजनीति के अध्ययन के विभिन्न आधुनिक दृष्टिकोण विकसित किए गए थे। ये आधुनिक दृष्टिकोण, जिसमें व्यवहारवादी व उत्तर–व्यवहारवादी दृष्टिकोण, प्रणाली दृष्टिकोण, संचार दृष्टिकोण आदि शामिल हो सकते है, इसके माध्यम् से राजनीति के वैज्ञानिक, यथार्थवादी और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया जा सकता है। इस संबंध में, कहा जाता है कि आधुनिक दृष्टिकोणों के विकास ने तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है, जो कि अल्मांड और पॉवेल के अनुसार इस प्रकार था– (अ) अधिक व्यापक दायरे की खोज (ब) यथार्थवाद की खोज (स) सुस्पष्टता की खोज (द) सैद्धांतिक क्रम की खोज।

पिछली इकाई में, आपने 'संस्थागत दृष्टिकोण' नामक राजनीतिक अन्वेषण के एक बहुत पुराने और महत्वपूर्ण पांरपरिक दृष्टिकोण के उपयोग का अध्ययन किया है, जिसने सरकार और राज्य के औपचारिक राजनीतिक संस्थानों एवं एजेंसियों के अध्ययन पर जोर दिया। इस इकाई में, तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के लिए एक लोकप्रिय आधुनिक दृष्टिकोण का अध्ययन, समीक्षा और अन्वेषण करने का प्रयास किया जाएगा, जिसे 'प्रणाली दृष्टिकोण' कहा जाता है, जिसे प्रणाली विश्लेषण भी कहा जाता है, जो औपचारिक संस्थानों से परे राजनीति का अध्ययन करना चाहता है और संरचनाएं एवं राजनीति के अन्य पहलुओं जैसे कार्यो, प्रक्रियाओं और व्यवहारों का अवलोकन करता है। यह

इकाई विकास, ऐतिहासिक संदर्भ, विशेषताओं, शक्तियों और कमजोरियों एवं प्रणाली दृष्टिकोण के विभिन्न अन्य पहलुओं से सरोकार रखेगी।

4.2 प्रणाली दृष्टिकोण

प्रणाली दृष्टिकोण एक प्रणाली को निर्मित करने वाले अंतर–संबंधित चर का अध्ययन है, जो कई तथ्यो और परस्पर क्रिया पर आधारित तत्वों का एक समूह है। यह दृष्टिकोण मानता है कि प्रणाली में विवेकी, नियमित और आंतरिक रूप से सुसंगत प्रतिरूप होते हैं। प्रत्येक एक दूसरे के साथ परस्पर क्रिया करते है और सम्पूर्ण की एक स्व–विनियमन क्रम की तस्वीर पेश करते है। इस प्रकार, यह वृहत प्रणाली के अन्तर्गत और अभी तक विश्लेषणात्मक रूप से अलग होने वाली परस्पर क्रिया के एक समूह का अध्ययन है। प्रणाली सिद्धांत मानता है :

- संपूर्ण का अस्तित्व अपनी योग्यता के आधार पर,
- सम्पूर्ण भागों से मिलकर,
- अन्य सम्पूर्णो से अलग सम्पूर्ण का अस्तित्व,
- प्रत्येक संपूर्ण पूर्णतः दूसरे को प्रभावित करता है और बदले में स्वयं भी प्रभावित होता है,
- सम्पूर्ण के हिस्से न केवल अंतर–संबंधित है, बल्कि एक दूसरे के साथ परस्पर क्रिया भी करते है, जिससे एक स्व–विकसित कार्य होता है।

प्रणाली सिद्धांत का जोर प्रणाली और उसके घटकों एवं उनके व्यवहारों के संयोजन पर है, जिसके माध्यम से समल के साथ स्वयं को बनाए रखता है।

4.2.1 प्रणाली सिद्धांत की उत्पत्ति

प्रणाली दृष्टिकोण की उत्पत्ति का पता जर्मन जीव विज्ञानी लुडविग वॉन बर्टालांफी के कार्यो से लगाया जा सकता है, जिन्होंने 1930 के दशक में जीव विज्ञान के अध्ययन में सामान्य प्रणाली सिद्धांत का उपयोग प्रारम्भ किया। जैसा कि बर्टालांफी द्वारा परिभाषित किया गया है, एक प्रणाली 'पारस्परिक विचार–विमर्श से निर्मित तत्वों का एक समूह है'। यह अवधारणा इस विचार पर आधारित है कि एक समूह के भीतर के तत्व किसी न किसी तरह से एक दूसरे से संबंधित है और प्रतिक्रिया में, कुछ अन्य समरूप प्रक्रियाओं के आधार पर एक दूसरे के साथ परस्पर विचार करते है। इस सामान्य प्रणालियों के सिद्धांत से सामाजिक वैज्ञाननिकों ने विचार लिया और जिसका उपयोग द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की सामाजिक घटनाओं को समझाने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप मे किया। 1960 के दशक के बाद से, प्रणाली सिद्धांत या प्रणाली विश्लेषण राजनीति विज्ञान के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण तत्व बन गया। डेविड ईस्टन राजनीतिक विश्लेषण में प्रणाली दृष्टिकोण निरूपित करने वाले राजनीतिक वैज्ञानिकों में सर्वप्रथम थे। अपनी पुस्तक 'ए सिस्टम् एनालिसिस ऑफ पॉलिटिकल लाइफ (1965) में, ईस्टन ने एक राजनीतिक प्रणाली को उस 'व्यवहार या परस्पर विचार–विमर्श के समुच्चय के रूप में परिभाषित किया, जिसके माध्यम से आधिकारिक आवंटन समाज के लिए किए और लागू किए जाते है।' राजनीति विज्ञान में प्रणाली दृष्टिकोण को लागू करते हुए, उन्होंने तर्क

दिया कि कैनवास (चित्रफलक) का प्रत्येक भाग अकेले खड़ा नहीं होता है, बल्कि अन्य भागों से संबंधित होता है तथा सम्पूर्ण प्रणाली के संचालन के संदर्भ को पूर्णतः समझे बिना एक भाग के संचालन को पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता है'। अन्य प्रमुख विद्ववान जिन्होने राजनीतिक विश्लेषण में प्रणाली दृष्टिकोण की वकालत की, वे ग्रेबियल आलमंड (कम्परेटिव पालिटिक्स : ए डेवल्पमेंट एपरोच, 1978), डेविड एप्टर (इन्ट्रोडक्शन टू पॉलिटिकल एनालिसिस, 1978), कार्ल डॅयूस्च (नेशन एंड वर्ल्ड : कंटेम्परेरी पॉलिटकल साइंस, 1967), मॉर्टन कपलान (सिस्टम एंड प्रोसेस इन इंटरनेशनल पॉलिटिक्स, 1957), हेराल्ड लास्वेल (पावर एंड सोसाइटी, 1950) आदि।

4.2.2 ऐतिहासिक संदर्भ

प्रणाली दृष्टिकोण, किसी भी अन्य आधुनिक दृष्टिकोण की तरह, एक ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में विकसित हुआ है। जैसा कि तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के लिए पांरपरिक दृष्टिकोण निरर्थक साबित हुए, वैज्ञानिक तरीके से इसे समझने की आवश्यकता अधिक महत्वपूर्ण हो गई। अन्य विषयों के प्रभाव, दोनों प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञान और उनके पारस्परिक अंतर निर्भरता ने इन विषयों का अवलोकन करने के लिए एक नई प्रेरणा दी, तुलनात्मक राजनीति ने नया विचार दिया और इस विचार को सामने लाया कि वैज्ञानिक विश्लेषण राजनीति को समझने का एकमात्र तरीका है। जैसे–जैसे समय बीतता गया, राजनीतिक प्रणालियों का अध्ययन, संविधान और सरकारों के अध्ययन से अधिक महत्वपूर्ण हो गया, राजनीतिक प्रक्रियाओं का अध्ययन राजनीतिक संस्थाओं के अध्ययन की तुलना में अधिक शिक्षाप्रद माने जाने लगा। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की अवधि में विशेष रूप से यूएसए में देखी गई कि कई अमेरिकी विद्ववानों के लेखन में एक मौलिक परिवर्तन आया जब उन्होंने अन्य सामाजिक और प्राकृतिक विज्ञानों से बहुत कुछ लिया ताकि राजनीतिक अध्ययनों को नया अनुभवजन्य अभिविन्यास दिया जा सके, जिससे अतंतः कई अवधारणाओं का अन्वेषण करने में मद्द मिली, इस प्रक्रिया में अपने निष्कर्षो को समृद्ध किया। सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (यूएसए) ने एक वातावरण प्रदान करने में बहुत योगदान दिया, जिसमें तुलनात्मक राजनीति में वैज्ञानिक विश्लेषण किया जा सकता है। कुछ अन्य अमेरिकी फाउंडेशन जैसे कि फोर्ड फाउंडेशन, रॉकफेलर फाउंडेशन और कार्नेगी फाउंडेशन ने तुलनात्मक राजनीति में अध्ययन के लिए उदारता से ध्यान प्रदान किया। इस प्रकार, तुलनात्मक राजनीति में नए दृष्टिकोण, नई परिभाषाएं, नए अनुसंधानिक साधन पेश करना संभव हुआ। इस सब के कारण सुविधाजनक रूप से कहा जा सकता है 'विषय के अध्ययन में क्रांति : अपने लक्ष्य, समस्याओं और तरीकों की परिभाषा में एक क्रांति।' (संदर्भ देखे माइकल रश और फिलिप अल्थॉफ की किताब 'एन इंट्रोडक्शन टू पोलिटिकल सोशयालोजी')। प्रणाली विश्लेषण का परिचय, अन्य आधुनिक दृष्टिकोण की तरह, ईस्टन, अल्मांड, कपलान जैसे लेखकों द्वारा तुलनात्मक राजनीति में, वास्तव में एकात्मक प्रवृत्ति जो प्रक्रिया को बाधित करती है के विरूद्ध एक प्रतिक्रिया थी। वैज्ञानिक विश्लेषण के समरूप सभी ज्ञान के एकीकरण को संभव बनाते हैं। प्रणाली दृष्टिकोण आधुनिक दृष्टिकोणों में से एक है जो राजनीतिक गतिविधि और राजनीतिक व्यवहार को पहले की तुलना में अधिक स्पष्ट रूप से समझने में मद्द करता है। यह सामाजिक घटनाओं को परस्पर संबंधों के एक समूह के

रूप में देखता है। इसलिए माना जाता है कि प्रणाली विश्लेषण न केवल राजनीति विज्ञान बल्कि लगभग सभी सामाजिक विज्ञानों तक अपनी पहुंच बनाता है।

बोध प्रश्न 1

नोटः 1) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

2) इकाई के अंत में दिए गए मॉडल उत्तर के साथ अपने उत्तर की जांच करें।

1) प्रणाली विश्लेषण का जोर इस पर है–

.....

.....

.....

.....

.....

2) पांरपरिक दृष्टिकोणों की सक्षिप्त में कमियां बताएं।

.....

.....

.....

.....

.....

4.3 सामान्य प्रणाली सिद्धांत और प्रणाली सिद्धांत

4.3.1 सामान्य प्रणालीयों और प्रणाली दृश्टिकोणो के बीच अंतर

प्रणाली विश्लेषण सामान्य प्रणाली सिद्धांत से निर्गत हुआ हो सकता है, लेकिन दोनों कई मामलों में अलग है। पहले क्रम की दार्शनिक त्रुटि हेतु सामान्य प्रणाली सिद्धांत परिमाण के साथ प्रणाली सिद्धांत की पहचान करता है। जबकि सामान्य प्रणाली सिद्धांत एक प्रणाली की धारणा देता है, जो मानव शरीर के भागों के समान एकीकृत है, प्रणाली सिद्धांत भागों के अलग अस्तित्व को मान्यता देता है। इसका क्या तात्पर्य है कि सामान्य प्रणाली सिद्धांत प्रणाली की एकता की वकालत करता है, जबकि प्रणाली सिद्धांत विविधता में एकता की बात करता है। यह एक कारण है कि सामान्य प्रणाली सिद्धांत को संभावित और सामाजिक घटनाओं के विश्लेषण के लिए शायद ही कभी लागू किया गया है, जबकि प्रणाली सिद्धांत को राजनीतिक विश्लेषण में सफलतापूर्वक लागू किया गया है। उदाहरणार्थ, डेविड ईस्टन ने प्रणाली सिद्धांत को राजनीति में लागू किया है। प्रोफेसर काप्लान ने सामान्य प्रणाली सिद्धांत और प्रणाली सिद्धांत के बीच के अंतर को सामने लाया है। वह कहते है, ''...प्रणाली सिद्धांत सभी प्रणालियों का एक सामान्य सिद्धांत नहीं है। हालांकि सामान्य प्रणाली सिद्धांत विभिन्न प्रकार की प्रणालियों को अलग करने और एक ढ़ाचा स्थापित करने का प्रयास करता है

जिसके अन्तर्गत विषय वस्तु के मतभेदों के बावजूद प्रणालियों के बीच समानता के आह्वान को पहचाना जाता है, विभिन्न प्रकार की प्रणालियों को व्याख्यात्मक उद्देश्यो के लिए विभिन्न सिद्धांतो की आवश्यकता होती है। प्रणाली सिद्धांत न केवल सामान्य सिद्धांत दृष्टिकोण के हटकर प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि यह भी बताता है कि ऐसे प्रयासों के असफल होने की संभावना क्यों है। इस प्रकार राजनीति के लिए प्रणाली सिद्धांत का सही अनुप्रयोग सामान्य सिद्धांत से तुलनात्मक सिद्धांत से हटकर होगा।'' इसके अलावा, सामाजिक विज्ञान जैसे राजनीतिक विज्ञान में सामान्य प्रणाली सिद्धांत की अवधारणाओं का उपयोग करना संभव नहीं है, जबकि प्रणाली सिद्धांत अवधारणाओं को प्रदान करने में सक्षम है (जैसे आगत–निर्गत, स्थिरता, संतुलन, प्रतिक्रिया) जिसे अच्छी तरह से अनुभवजन्य राजनीतिक वैज्ञानिको द्वारा मान्यता प्राप्त है।

4.3.2 प्रणाली विश्लेषण

लक्षण की विषेशताएं

प्रणाली विश्लेषण का तात्पर्य है कि प्रणाली परस्पर सम्बधों का एक सम्मुचय के रूप में। ओ. आर.यंग के अनुसार, यह ''उद्देश्यों का एक समूह है, साथ में उद्देश्यों के बीच और उनकी विशेषताओं के बीच संबंध''। यह कहने हेतु एक प्रणाली मौजूद है यह कहना है कि यह अपने तत्वों के माध्यम से अस्तित्व में है, उद्देश्य और इसके तत्वों (वस्तुएं) में परस्पर प्रभाव पड़ता है और वे एक समरूपता के अन्तर्गत प्रतिलिप है। एक प्रणाली के विश्लेषक अंतर–संबंधित और वेब–जैसे उद्देश्यों को मानते है और उनके बीच हमेशा मौजूदा संबंधों की तलाश करते है। ओ.आर. यंग ने उद्देश्यों के बीच एक परस्पर संबंधों की वकालत की है। उनकी मुख्य चिंताएं है– 1) प्रणाली के उद्देश्यों के बीच प्रतिरूप वाले व्यवहार पर जोर देना, 2) उन कारकों के बीच परस्पर संवादत्मक व्यवहार की व्याख्या करना, 3) उन कारकों की खोज करना जो प्रणाली को बनाए रखने में मद्द करते है। प्रणाली विश्लेषण प्रणाली को समझने हेतु विस्तृत और अवधारणाओं का एक समुच्चय होता है। इसमें प्रणाली, उप–प्रणाली, पर्यावरण, आगत, निर्गत, रूपांतरण प्रक्रिया, प्रतिपुष्टि (फीड्बैक) आदि शामिल है। प्रणाली का अर्थ है संबंधों को बनाए रखना, व्यवहार के प्रतिरूप का प्रदर्शन करना, इसके कई हिस्सों के बीच जैसे उद्देश्यों और पहचानों में। एक प्रणाली जो एक बड़ी प्रणाली के एक तत्व का गठन करती है उसे उप–प्रणाली कहा जाता है। वह समुच्चय जिसके अन्तर्गत कोई प्रणाली होती है या काम करती है, पर्यावरण कहलाता है। प्रणाली को उसके वातापरण से अलग करने वाली रेखा को सीमा के रूप में जाना जाता है। प्रणाली, प्रणाली पर मांगो के रूप में पर्यावरण से आगत प्राप्त करती है और इसके कामकाज के लिए समर्थन करता है। जैसे ही प्रणाली संचालित होती है, आगत को रूपांतरण प्रक्रिया कहा जा सकता है और यह प्रणाली के निर्गत नियमों को लागू करने के लिए करती है या नीतियों को लागू किया जाता है। जब प्रणाली निर्गत–आगत को परिवर्तित या संशोधित करने के लिए वातावरण को प्रभावित करता है, तो प्रतिक्रिया होती है। इसलिए. प्रणाली दृष्टिकोण की अपनी विशेषताएं है, जिसे निम्नवत् अभिव्यक्त किया जा सकता है–

- एक सामाजिक घटना पृथकरूप से मौजूद नही होती है, लेकिन कई भागों ने मिलकर एक संपूर्ण निर्मित किया है। यह एक इकाई है, यह अस्तित्व और अपने स्वयं के लक्ष्य के साथ एक जीवंत इकाई है।
- इसके भाग एक साथ नहीं हो सकते है और मूलतः एक साथ संबंधित नहीं है, लेकिन वे इस अर्थ में एक संपूर्ण का निर्माण करते है कि वे परस्पर मिलते है और अंतर–संबंधित है। विशिष्ट व्यवहार संबंध उन्हें एक जीवंत प्रणाली में परिवर्तित करते हैं।
- यह आगत और निर्गत के एक तंत्र के माध्यम् से एवं एक पर्यावरण के अर्न्तगत/जो इसे प्रभावित करता है तथा जो बदले में में पर्यावरण के लिए प्रतिक्रिया प्रदान करता है, इस माध्यम से संचालित होता है।
- इसकी मुख्य चिंता यह है कि यह स्वयं को कितना बेहतर रखता है और क्षय एवं गिरावट की चुनौतियों का सामना करता है।
- यह इसके कई हिस्सों के बीच प्रतिमान संबंधों को दर्शाता है, उनके सापेक्ष व्यवहार और भूमिका की व्याख्या करते हुए उनसे प्रदर्शन करने की अपेक्षा की जाती है।

4.3.3 प्रणाली दृष्टिकोण : चिंता और उद्देश्य

प्रणाली विश्लेषण कुछ उद्देश्यों से संबंधित है। इसकी प्रमुख चिंताओं में से एक है 'प्रणाली की समग्रता को बनाए रखना', जो वेल्श के अनुसार व्यवस्था बनाए रखने की क्षमता पर निर्भर करता है। यह प्रणाली एक 'नियमित प्रक्रिया' विकसित करती है जिसके द्वारा समाज में संसाधनों का वितरण किया जाता है, ताकि प्रणाली में सदस्य प्रणाली को अराजकता और पतन से बचाने के लिए पर्याप्त रूप से संतुष्ट होकर कार्य करें।

प्रणाली दृष्टिकोण की दूसरी चिंता यह है कि प्रणाली अपने वातावरण में परिवर्तन की चुनौती का सामना कैसे करती है। वेल्श ने तर्क दिया कि वातावरण में परिवर्तन स्वाभाविक है, वातावरण के लिए प्रणाली को प्रभावित करना स्वाभाविक है और प्रणाली को वातावरणीय परिवर्तनों की वास्तविकताओं के अनुकूल बनाना होगा। प्रणाली दृष्टिकोण परिवर्तनों की प्रतिक्रया देने की प्रणालियों की आवश्यकता और पहले से ही प्रदत्त परिवर्तनो के बीच संघर्ष की पहचान करता हैं जैसा कि वातावरण द्वारा प्रदान किया गया है, तथा यह संघर्ष को हटाने की क्षमता भी रखता है। प्रणाली दृष्टिकोण का तीसरा उद्देश्य वह महत्व है जो प्रणाली के परिपेक्ष्य में 'लक्ष्य–प्राप्ति' को देता है। कुछ विशिष्ट पहचान योग्य लक्ष्यों का निर्धारित किए और आगे बढ़ाएं बिना कोई भी प्रणाली एक समयावधि के पश्चात् अस्तित्व में नहीं रह सकती है। वेल्श के अनुसार, इन लक्ष्यों का अनुसरण, प्रणाली दृष्टिकोण में ध्यान देने का एक महत्वपूर्ण केंद्र है।

बोध प्रश्न 2

नोटः अ) अपने उत्तर के लिए, नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ब) इस इकाई के अंत में दिए गए मॉडल उत्तर के साथ अपने उत्तर की जांच करें।

1) सामान्य प्रणाली सिद्धांत और प्रणाली सिद्धांत के बीच मुख्य अंतर को पहचानें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रणाली दृष्टिकोण के दो विशिष्ट लक्षण बताएं।

.....

.....

.....

.....

.....

4.4 प्रणालियों के विश्लेषण के व्युत्पन्न शब्द

4.4.1 राजनीतिक प्रणाली के व्युत्पन्न शब्द : आगत–निर्गत व्युत्पन्न शब्द

राजनीतिक प्रणाली या आगत–निर्गत दृष्टिकोण डेविड ईस्टन द्वारा प्रतिस्थापित किए गए प्रणाली विश्लेषण का एक व्युत्पन्न शब्द है। उन्होंने सिद्धांत के स्तर पर 'नए और उपयोगी तरीके से राजनीतिक घटनाओं की व्याख्या करने के लिए अवधारणाओं का एक मूल समुच्चय प्रदान किया' (डेविस एंड लुईस : मॉडलस् ऑफ पॉलिटिकल सिस्टम्)। ईस्टन राजनीतिक प्रणाली को विश्लेषण की मूल इकाई के रूप में चुनता है और विभिन्न प्रणालियों के अन्तर्वती–प्रणाली व्यवहार पर ध्यान केंद्रित करता है। वह राजनीतिक प्रणाली का इस प्रकार परिभाषित करता है जिसमें 'उन अंतः–क्रियाओं को जिसके माध्यम् से मूल्यों को आधिकारिक रूप से समाज के लिए आंवटित और कार्यान्वित किया जाता है।' यह ईस्टन के राजनीतिक प्रणाली की अवधारणा की कुछ विशेषताओं को उजागर करने के लिए उपयोगी होगा, जिन्हें संक्षिप्त रूप से निम्नवत् रखा जा सकता हैः–

- राजनीतिक प्रणाली से तात्पर्य है कि परस्पर संबंधों का एक समुच्चय जिसके माध्यम् से मूल्यों को आधिकारिक रूप से आंवटित किया जाता है। इसका अर्थ उन लोगों के निर्णय जो सत्ता में है, और ये निर्णय बाध्यकारी होते है।
- राजनीतिक प्रणाली एक ऐसी प्रणाली है जिसके अन्तर्गत लोगों और संस्थानों के बीच संबंधों के नियमित रूप से लगातार प्रतिरूपण होता है।
- किसी भी प्राकृतिक प्रणाली की तरह राजनीतिक प्रणाली एक स्व–विनियमित प्रणाली है, जो अपनी प्रक्रियाओं और संरचनाओं को स्वयं से परिवर्तित कर सकती है, ठीक कर सकती है या समायोजित कर सकती हैं।

- राजनीतिक प्रणाली इस अर्थ में गतिशील है कि यह प्रतिपुष्टि (फीड्बैक) तंत्र के माध्यम से स्वयं को बनाए रख सकती है। फीड्बैक तंत्र इस प्रणाली से जुड़ी हर चीज के माध्यम से बने रहने में मद्द करता है, जो इसे परिवर्तित कर सकता है यहां तक की मौलिक रूप से भी।
- राजनीतिक प्रणाली वातावरण की अन्य प्रणालियों से भिन्न है, भौतिक, जैविक, सामाजिक, आर्थिक, पारिस्थतिक आदि से।
- मांग और समर्थन के माध्यम से आगत राजनीतिक प्रणाली को कार्यशील रखती है, जबकि नीतियों और निर्णयों के माध्यम् से निर्गत प्रतिपुष्टि के द्वारा स्वीकार न किए जाने वाले को बाहर कर देता है।

ओ.आर.यंग ने ईस्टन की राजनीतिक प्रणाली की अनिवार्यताओं का सार प्रस्तुत किया, ''सभी से ऊपर, राजनीतिक प्रणाली को एक रूपांतरण प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, जो एक राजनीतिक प्रणाली और उसके वातावरण के बीच निंरतर आदान–प्रदान सहित प्रक्रिया की गतिशीलता के स्थायित्व के साथ कार्य करती है, निर्गत उत्पन्न करती है और इसके वातावरण को परिवर्तित करती है। साथ ही, प्रणाली दृष्टिकोण राजनीतिक गतिशीलता सहित व्यवस्थित अनुकूलन प्रक्रियाओं और यहाँ तक कि लक्ष्य–परिवर्तन प्रतिपुष्टि के रूप में उद्देश्यपूर्ण पुर्निर्देशन के साथ निपटने के लिए कई अवधारणाएं प्रदान करता है''।

हालांकि, ईस्टन की राजनीतिक प्रणाली दृष्टिकोण आलोचनाओ से मुक्त नहीं है। उदाहरणार्थ, प्रोफेसर एस.पी. वर्मा इसे एक अमूर्त के रूप में मानते है, जिसका अनुभवजन्य राजनीति (जो कि चिरसम्मत है) के साथ संबंध स्थापित करना असंभव है। यूजेन मेहान ने यह भी कहा कि ईस्टन सिद्धांत को कम समझाते है और अवधारणा के ढांचे का अधिक निर्माण करते है। उनके विश्लेषण में यह इंगित किया जा सकता है कि उन्होंने राजनीतिक प्रणाली में शक्ति का पता लगाने और वितरण करने तक अपने को सीमित रखा है। वे राजनीतिक प्रणाली की दृढ़ता और अनुकूलता जैसे सवालों के साथ तनाव, स्थिरता और संतुलन के विनियमन को लेकर अधिक चिंतित रहे है। इस प्रकार वे केवल यथास्थिति की वकालत करते है। अतः ईस्टन के नियमन में राजनीति में गिरावट, व्यवधान और राजनीतिक प्रणाली के विखंडन के बारे में बहुत कम चर्चा की गई है। सभी दावों के बावजूद कि राजनीतिक प्रणाली दृष्टिकोण वृहत–स्तरीय अध्ययन के लिए सृजित किया गया है, ईस्टन के विश्लेषण ने बड़े पैमाने पर पश्चिमी देशों पर ध्यान केंद्रित किया है। ईस्टन के आगत–निर्गत मॉडल की राजनीतिक प्रणाली केवल वर्तमान से संबंधित है और इसलिए इसमें भविष्य का कोई परिपेक्ष्य नहीं है तथा अतीत का अध्ययन कम है।

हांलाकि, आगत–निर्गत या राजनीतिक प्रणाली दृष्टिकोण के गुणों को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। इसने तुलनात्मक विश्लेषण के लिए एक उत्कृष्ट तकनीक प्रदान की है, जिसमें अवधारणाओं और श्रेणियों का एक समुच्चय प्रस्तुत किया है, जिन्होंने तुलनात्मक विश्लेषण को अधिक शिक्षाप्रद बनाया है। ईस्टन का विश्लेषण सभी राजनीतिक विश्लेषण में सबसे अधिक व्यवस्थित दृष्टिकोण है। इसने राजनीति विज्ञान में प्रणाली विश्लेषण की आधारशिला भी रखी जो राजनीति को एक सामान्य कार्यात्मक सिद्धांत प्रदान करता है।

4.4.2 संरचनात्मक–कार्यात्मक व्युत्पन्न

गैब्रियल अलमांड द्वारा अपनाई गई संरचनात्मक–कार्यात्मक विश्लेषण प्रणालियों का एक और व्युत्पन्न है, जो राजनीति विज्ञान में व्यापक रूप से अपनाया गया है, खासकर तुलनात्मक राजनीति में। यह मुख्य रूप से प्रणाली के रखरखाव और विनियमन की घटना से संबंधित है। इस दृष्टिकोण का मूल सैद्धांतिक प्रस्ताव यह है कि सभी प्रणालियां अपनी संरचनाओं के माध्यम से कार्य करने के लिए मौजूद रहती है। प्रणाली दृष्टिकोण के संरचनात्मक–कार्यात्मक व्युत्पन्न की मूल धारणाएं निम्न हैः–

- समाज एक परस्पर जुड़ी एकल प्रणाली है जिसमें इसके प्रत्येक तत्व एक विशिष्ट कार्य करते है और जिसका मूल लक्ष्य संतुलन को बनाए रखना है।
- समाज में इसके कई भाग होते है जो परस्पर संबंधित है।
- सामाजिक प्रणाली की प्रमुख प्रवृत्ति स्थिरता ओर है जो इसके अंतर्निहित तंत्र द्वारा बनाए रखी जाती है।
- आंतरिक संघर्षो का समाधान करने की क्षमता आमतौर पर एक स्वीकृत तथ्य है।
- प्रणाली में परिवर्तन स्वाभाविक है, लेकिन वे न तो अचानक आते है और न ही क्रांतिकारी होते है, लेकिन हमेशा क्रमिक और अनुकूलक के साथ–साथ समायोजक भी होते है।
- प्रणाली की अपनी संरचना, उद्देश्य, सिद्धांत और कार्य है। संरचनात्मक–कार्यात्मक व्युत्पन्न राजनीतिक प्रणाली की बात करते है, जो कई संरचनाओ से निर्मित होती है, जो उनके नियत कार्यो के साथ क्रियात्मक और परिणामी संस्थानों के प्रतिरूप के रूप में होती है। इस संदर्भ में एक कृत्य का अर्थ है, 'प्रणाली को बनाए रखना या स्थायीत्वकरण'। तथा एक संरचना का तात्पर्य है कि 'संबंधित भूमिकाओं का कोई समुच्चय है' जिसमें राजनीतिक दलों और विधानसभाओं जैसे ठोस संगठनात्मक ढ़ांचे शामिल है। इसलिए, संरचनात्मक–कार्यात्मक विश्लेषण में जांच के अंतर्गत इस तरह की प्रणाली में आवश्यक या कम से कम आवर्ती कार्यो के समुच्चय की पहचान शामिल है। यह संरचनाओं के प्रकार और उनके अंतर्संबंधों को निर्धारित करने का प्रयास करता है जिसके माध्यम से उन कार्यो को किया जाता है।
- गैब्रियल अल्मांड ने अपनी पुस्तक ' द पालिटिक्स ऑफ द डेवलपिंग एरिया, 1960' मे संरचनात्मक–कार्यात्मक विश्लेषण को मानव अतःक्रियाओ के वैध प्रतिरूप के रूप में अभिव्यक्त किया है जिसके द्वारा क्रम बनाएं रखा जाता है, सभी राजनीतिक संरचनाएं अपने–अपने कार्य करती है, विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों में अलग–अलग परिमाण के साथ।

आगत प्रकार्य में निम्न शामिल हैः–

क) राजनीतिक समाजीकरण और भर्ती

ख) हित व्यक्तीकरण

ग) हित एकत्रीकरण

घ) राजनीतिक संवाद

निर्गत प्रकार्य में निम्न शामिल हैः–

अ) नियम बनाना

ब) नियमों को लागू करना

स) नियम अधिनिर्णय।

ग्रैब्रियल अलमांड ने राजनीति पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कम या ज्यादा वैध शारीरिक बल के आधार पर समाज के एकीकृत और अनुकूली कार्यो के रूप में राजनीति को देखा जा सकता है, जो राजनीतिक प्रणाली को ''सभी स्वतंत्र समाजों में पाई जाने वाली पारस्परिक विचार–विमर्श की प्रणाली के रूप में मानती है, जो रोजगार या रोजगार के खतरे के साधनों के आधार पर एकीकरण और अनुकूलन के कार्य करती है, जो समाज में कम या अधिक वैध व्यवस्था बनाए रखने या परिवर्तित करने की व्यवस्था है।'' उन्होंने तर्क दिया कि राजनीतिक और अन्य सामाजिक प्रणालियों में राजनीतिक संरचनाएं समान कार्य करती है, सभी संरचनाएं बहुआयामी है, और ये सभी प्रणालियां अपने वातावरण के अनुकूल होती है जब राजनीतिक संरचनाएं सामान्य या सही तरीके से व्यवहार नहीं करती है।

इस प्रकार, ईस्टन के आगत–निर्गत मॉडल और अलमांड के संरचनात्मक–कार्यात्मक दृष्टिकोण के बीच एक बुनियादी अंतर है। ईस्टन ने राजनीतिक प्रणाली के हिस्सों के परस्पर संपर्क और अतंर्संबंध के पहलुओं पर जोर दिया, वही आलमंड राजनीतिक संरचनाओं और उनके द्वारा किए गए कार्यो पर अधिक ध्यान देते हैं। और यह संभवतः संरचनात्मक–कार्यात्मक विश्लेषण की पहली कमजोरी है जो संरचनाओं के प्रकार्यो के बारे में बात करता है एवं उन परस्पर विचार–विमर्श की उपेक्षा करता है जो राजनीतिक प्रणाली के हिस्सों के रूप में कई संरचनाओं की विशेषताएं है। अलमांड का मॉडल सूक्ष्म–स्तर पर विशलेषणात्मकता से ग्रस्त है, क्योंकि यह पश्चिमी राजनीतिक प्रणाली या अधिक विशिष्ट रूप से अमेरिकी राजनीतिक प्रणाली की व्याख्या करता है। वे राजनीतिक प्रणाली की अपनी व्याख्या में आगत के पहलू को अधिक महत्व देते है और निर्गत को कम, इस प्रक्रिया मे प्रतिपुष्टि तंत्र का केवल संदर्भ देते है। ईस्टन की तरह, अलमांड भी यथास्थितिवादी के रूप में उभरे, क्योंकि उन्होंने ने भी व्यवस्था को बनाए रखने पर जोर दिया। अलमांड के द्वारा दो पदो –'संरचनाओं और 'प्रकार्यो' को अलग–अलग करने के आग्रह पर सरटोरी ने टिप्पणी करते हुए कहा, 'संरचनात्मक–प्रकार्यात्मक विश्लेषण एक लंगड़ा विद्ववान है जो दो पैरों पर चलने का दावा करता है, लेकिन वास्तव में एक पैर है और वो भी खराब पैर'। वह 'संरचना' और 'प्रकार्य' के मध्य परस्पर क्रिया को समझ नही सके, क्योंकि ये दो शब्द शायद ही कभी अलग हो सकते है, संरचना सम्पूर्ण प्रक्रिया के दौरान स्वतः द्वारा आगत किए गए प्रकार्यात्मक उद्देश्यो के लिए संबंधी भाई की भूमिका में होती है।'' तथा इसके बावजूद, संरचनात्मक–प्रकार्यात्मक मॉडल की योग्यता को पूर्णतः अनदेखा नही किया जा सकता है। इसने राजनीति विज्ञान में, विशेषकर तुलनात्मक राजनीति में, नए वैचारिक साधनों को सफलतापूर्वक पेश किया है। इसने राजनीतिक वास्तविकताओं में नई अंतर्दृष्टि प्रदान की है। और यह एक कारण है कि इस मॉडल को व्यापक रूप

से अपनाया है, एवं इसका उपयोग एक वर्णनात्मक और आदेशात्मक ढ़ांचे के रूप में किया जा रहा है।

4.4.3 साइबरनेटिक्स (संचार और नियंत्रण संबंधी विज्ञान) व्युत्पन्न

प्रणाली विश्लेषण का एक अन्य महत्वपूर्ण व्युत्पन्न 'संचार दृष्टिकोण' है, जिसे कार्ल डॅयूश्च ने 'साइबरनेटिक्स' कहा। डॅयूश्च ने साइबरनेटिक्स को परिभाषित करते हुए कहा कि ये संचार और नियंत्रण का विज्ञान है। यह सभी प्रकार के संगठनों में संचार और नियंत्रण के व्यवस्थित अध्ययन पर केंद्रित है। साइबरनेटिक्स के विचार से पता चलता है कि सभी संगठन कुछ मूलभूत तरीकों में एक जैसे है और प्रत्येक संगठन को संचार के द्वारा एक साथ रखा जाता है। डॅयूश्च के साइबरनेटिक्स दृष्टिकोण ने 'सरकारों' को उन संगठनों के रूप में देखा, जहां चैनलों के माध्यम से सूचना–प्रक्रियाओं का संचार किया जाता है। साइबरनेटिक्स के अनुसार सूचना, घटनाओं के बीच एक प्रतिमान संबंध है, संचार का तात्पर्य है कि ऐसे प्रतिरूपित संबंधों का हस्तांतरण और चैनल वे मार्ग है जिनके माध्यम से जानकारी स्थानांतरित की जाती है। डॅयूश्च ने ठीक ही कहा है कि उनकी पुस्तक 'द नर्वस ऑफ गवर्नमेंट (1966)' में शरीर रूपी राजनीति की हड्डियों या मांसपेशियों से कम और उसकी नसों से अधिक संबंधित है....अर्थात उसके संचार माध्यमों से संबंधित है। डॅयूश्च के अनुसार, राजनीतिक प्रणाली संचार चैनलों के एक नेटवर्क के रूप में, निर्णय लेने और प्रवर्तन की एक प्रणाली के अलावा कुछ भी नही है। न्यूरोफिजियोलॉजी, मनोविज्ञान और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के विज्ञान से काफी हद तक निष्कर्ष निकालते हुए, डॅयूश्च ने जीवित चीजों, इलेक्ट्रानिक्स मशीनों और सामाजिक संगठनों के बीच प्रक्रियाओं और प्रकार्य आवश्यकताओं में समानताएं मानी। उनके अनुसार, समाज में संगठनों में सूचना को संचारित करने और प्रतिक्रिया देने की क्षमता है (डेविस और लेविस, मॉडल्स ऑफ पॉलिटिकल सिस्टम, 1971)।

प्रणाली विश्लेषण के साइबरनेटिक्स मॉडल की विशिष्ट विशेषताएं, संक्षेप में निम्नवत् बताई जा सकती हैः–

- साइबरनेटिक्स मॉडल में फीडबैक एक प्रमुख अवधारणा है। इसे सहायक तंत्र भी कहा जाता है। फीडबैक का तात्पर्य डॅयूश्च के अनुसार एक संचार नेटवर्क है जो एक आगत की सूचना के जवाब में कार्यवाई करता है।
- राजनीतिक प्रणाली सहित सभी संगठनों की विशेषता फीडबैक तंत्र है। यह फीडबैक है जो गतिशीलता का परिचय देता है अन्यथा यह एक स्थैतिक विश्लेषण हो सकता है।

इस प्रकार, डयूश्च का साइबरनेटिक्स मॉडल संचार, नियंत्रण और चैनलों से संबंधित है, जो ईस्टन के परस्पर क्रिया के आगत–निर्गत मॉडल और अलमांड के संरचना और उसके प्रकार्यो पर आधारित संरचनात्मक–प्रकार्य विश्लेषण के विरूद्ध है। ये सभी प्रणाली के कामकाज की व्याख्या करना चाहते है। इनमें परिवर्तन के बीच स्वयं को अनुकूलित करने की क्षमता है और समय के साथ खुद को बनाए रखने की भी क्षमता है।

- हांलाकि, डयूश्च के साइबरनेटिक्स मॉडल में कई कमियाँ हैंः– यह अनिवार्य रूप से एक इंजीनियरिंग दृष्टिकोण है जो मनुष्य और समकालीन संस्थाओं के प्रदर्शन को समझाता है जैसे कि वे मशीन है। साइबरनेटिक्स 'गुणवत्ता–उन्मुख' के बजाय 'मात्रा–उन्मुख' भी है, जो राजनीतिक घटनाओं की समझ को जटिल बनाता हैं। लेकिन, प्रणाली दृष्टिकोण के व्युत्पन्न के रूप में, साइबरनेटिक्स ने मानव व्यवहार के संबंध में राजनीतिक घटनाओं को समझाने में अपना योगदान दिया। इस अर्थ में, साइबरनेटिक्स मॉडल ने वास्तव में राजनीतिक प्रणाली को समझने में हमारे प्रयास में विस्तार किया है।

बोध प्रश्न 3

नोटः अ) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ब) इस इकाई के अंत में दिए गए मॉडल उत्तर के साथ अपने उत्तर की जांच करें।

1) ईस्टन के आगत–निर्गत मॉडल की तीन विशेषताएं बताएं।

.....

.....

.....

.....

.....

2) डयूश्च के साइबरनेटिक्स सिद्धांत की सीमाएं क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

4.5 प्रणाली सिद्धांत : एक मूल्यांकन

राजनीतिक अध्ययन में प्रणालियों के दृष्टिकोण की शुरूआत ने न केवल राजनैतिक गतिविधियों, व्यवहार, किसी दी गई राजनीतिक प्रणाली की प्रक्रिया को समझने में मद्द करती है, बल्कि वृहत स्तर पर राजनीति की व्यापक और बेहतर समझ प्रदान करती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रणाली दृष्टिकोण राजनीतिक घटनाओं को एक इकाई के रूप में लेता है, जब कि ये अपने आप में एक प्रणाली है, यह न केवल इसके विभिन्न हिस्सों का कुल योग है, बल्कि परस्पर संबंधो में सभी भाग एक दूसरे के साथ जुडे हैं। प्रणाली सिद्धांतकारों ने जीव विज्ञान और अन्य प्राकृतिक विज्ञानों से बहुत कुछ लिया है तथा सामाजिक प्रणाली को जैविक प्रणाली के समकक्ष लाने का प्रयास किया है। दरअसल, दोनों प्रणालियों के बीच समानताएं है, लेकिन उपमाएं केवल हमेशा उपमाएं ही होती है। तर्क को मिथ्याकरण तक विस्तृत करने का प्रयास किया गया। मानव शरीर

एक हाथ से संबंधित होने के लिए नहीं है, जब हम एक व्यक्ति को समाज या सरकार के कार्यकारी अंग के एक विधानमंडल से संबंधित करते है। प्रणालियों के सिद्धांतकारों ने जैविक सिद्धांत का केवल विस्तारित रूप निरूपित किया है, जिस पर व्यक्तिवादियों ने एक बार तर्क किया था। प्रणाली के निर्माण और उसे कायम रखने के लिए सभी प्रणालियों के सिद्धांतकारों ने खुद को प्रतिबद्ध किया है। उनकी चिंता केवल व्यवस्था जैसी है वैसी ही समझाने की है। इसके अतिरिक्त उन्होंने उन कारणों को बताने का प्रयास किया, जो प्रणाली के अस्तिव को खतरे मे डालते हैं, तथा उन कारकों का बताया जो इसे सुदृढ कर सकते है। वे सबसे अच्छे रूप में, यथास्थितिवादी है, जिन्हें अतीत के बारे में बहुत कम जानकारी है और शायद भविष्य के लिए कोई चिंता नहीं है। सभी अवधारणाएं जो प्रणाली सिद्धांतकारों ने विकसित की है, वे वर्तमान की व्याख्या और समझ से परे नहीं है। संपूर्ण दृष्टिकोण संरक्षण और प्रतिक्रिया में निहित है।(वर्मा, 1966)।

प्रणाली सिद्धांतकारों ने राजनीति विज्ञान में या तुलनात्मक सरकार और राजनीति के क्षेत्र में, राज्य के स्थान पर राजनीतिक प्रणाली को यह तर्क देकर प्रतिस्थापित किया है कि 'राजनीतिक प्रणाली' पद राज्य की तुलना में विस्तृत वर्णन करता है। निसंदेह, यह तर्क व्यापक और स्पष्ट है। लेकिन जब ये सिद्धांतकार राजनीतिक प्रणाली की विशेषताओं को उजागर करते है, तो वे उसे राजनीतिक शक्ति या बल के अधिक नहीं कहते है, जिसके साथ पांरपरिक शब्द 'राज्य' आमतौर पर जुड़ा हुआ है। प्रणाली विश्लेषकों ने जो किया है वह यह है कि उन्होंने राजनैतिक विश्लेषण को वर्णनात्मक, स्थिर और गैर–तुलनात्मक बनाने के लिए पंरपरावादियों की निंदा की है। इसके बावजूद, उन्होंने राजनीति विज्ञान या तुलनात्मक राजनीति में प्राकृतिक और अन्य सामाजिक विज्ञानों से कई अवधारणाओं को पेश किया है ताकि अध्ययन के विषय को अधिक अंतर्विषयक बनाया जा सके। प्रणाली सिद्धांतकारों का दावा कि उन्होंने वैज्ञानिक और अनुभवजन्य शिक्षण विकसित किया, ये अतिवाद है।

4.5.2 प्रणाली दृष्टिकोण की शक्ति

यदि प्रणाली दृष्टिकोण के पीछे का विचार सामाजिक ताने बाने (वेब) को समझने के लिए एक कुंजी के रूप में प्रणाली की अवधारणा को स्पष्ट करना है, तो प्रणाली सिद्धांतकारों के प्रयास बेकार नहीं गए है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि प्रणाली विश्लेषण का प्रभाव इतना व्यापक रहा है कि अधिकांश तुलनात्मक राजनीति के अनुसंधान कर्त्ताओं ने प्रणाली अवधारणाओं का उपयोग किया है। यह बताना भी महत्वपूर्ण है कि प्रणाली दृष्टिकोण ने स्वयं का अच्छी तरह से संबोधित किया है और कई सार्थक प्रश्नों के लिए अच्छी तरह से निर्देशित किया है, ये प्रश्न इस प्रकार से है– अपने वातावरण से प्रणाली का संबंध, प्रणाली की दृढ़ता और समयोपरिता, प्रणाली की स्थिरता, प्रणाली के संभाग के रूप में संरचनाओं का निर्देशित प्रकार्य, प्रणाली की गतिशीलता और यंत्र।

प्रोफेसर एस.एन.रे ने प्रणाली सिद्धांत की खूबियों को बहुत ही कुशलता से अभिव्यक्त किया है– 'यह (प्रणाली सिद्धांत) हमें स्थूल–विश्लेषणात्मक लोगों के साथ सूक्ष्म–विश्लेषणात्मक अध्ययनों के लिए एक उत्कृष्ट अवसर देता है। इस सिद्धांत द्वारा विकसित अवधारणाएं नए प्रश्न प्रस्तुत करती है और राजनीतिक

प्रक्रियाओं के अंवेषण के लिए नए आयाम का निर्माण करती है। यह अक्सर अर्तदृष्टि और चीजों को अन्य अध्ययन विषयों के माध्यम से देखने के लिए संचार की सुविधा प्रदान करता है। इसे राजनीति विज्ञान के अंतर्गत एक सैद्धांतकि ढ़ांचे के सृजन के सबसे महत्वाकांक्षी प्रयासों में से एक माना जा सकता है।

4.6 सारांश

प्रणाली दृष्टिकोण राजनीतिक विज्ञान के अध्ययन में अपनाए गए आधुनिक तरीकों में से एक है, विशेष रूप से तुलनात्मक सरकारों और राजनीति में। यह राजनीतिक व्यवस्था को व्यक्तियों और संस्थानों के बीच बातचीत, अंतर्संबंधों, प्रतिरूपित व्यवहार के रूप में देखता है, संरचनाओं का एक दल जो अपने संबंधित कार्यों में लिप्त है तथा वह जो निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है और अपने आप को होने वाले परिवर्तनों में लिप्त रखने को प्रयास करता है।

हालांकि, प्रणाली दृष्टिकोण व्यवस्था का जो गतिशील विश्लेषण प्रदान करने का दावा करता है, वह इसके रखरखाव तक ही सीमित है। यह एक अनुभवजन्य अनुसंधान करने का दावा करता है, लेकिन जाँच के लिए पर्याप्त वैचारिक साधन प्रदान करने में विफल रहा है। यह राज्य की तुलना में विशेष रूप से राजनीतिक प्रणाली की व्यवस्था को व्यक्त करने में सक्षम नहीं हैं। जहाँ तक यथापूर्व स्थिति की बात है, यह दृष्टिकोण कमोबेश रूढ़िवादी है।

फिर भी कई तरीकों से प्रणाली दृष्टिकोण अद्वितीय है। इसने सामाजिक व्यवहार और सामाजिक अंतःक्रिया को समझने और विश्लेषण करने में एक व्यापक विषय–क्षेत्र प्रदान किया है। इसने प्राकृतिक विज्ञान से बहुत कुछ सीखा और पाया है तथा सामाजिक विज्ञान में अपनी अवधारणाओं का सफलतापूर्वक उपयोग किया है। यह राजनीति विज्ञान शास्त्र को कई प्रकार की कार्यप्रणाली प्रदान करने में सक्षम है।

4.7 संदर्भ

एल्मंड. जी. ए. एंड पॉवल, जीबी. (1978), कम्पेरेटिव पॉलिटिक्स : ए डेवलप्मेंट अप्रोच, लिटिल ब्राउन, बॉस्टन।

एप्टर, डेविड ई. (1977), इंट्रोडक्शन टू पॉलिटिकल एनालिसिस. मास्सः कैम्ब्रिज।

क्लिआरल्स्वर्थ. जे,(ईडी). (1996), कंटैम्परेरी पॉलिटिकल एनालिसिस. फ्री प्रेस, न्यूयार्क।

डाह्ल, रॉबर्ट ए (1979). मॉडर्न पॉलिटिकल एनालिसिस, एंगलवुड क्लिफ्स्।

डेविस एम.आर. एंड ल्यूविस, वी.ए. (1971), मॉडल्स् ऑफ पॉलिटिकल सिस्टमस्, मैक्मिलन, लंड़न।

डयूश्च, कार्ल (1963). दी नर्वस् ऑफ गवर्नमेंट, दी फ्री प्रेस ऑफ ग्लैनको, न्यूयार्क।

ईस्टन, डेविड (1965). एसिस्टम एनालिसिस ऑफ पॉलिटिकल लाइफ, जॉन विले, शिकागो।

मैक्रिडिस्, आर.सी. एंड़ वार्ड, आर.ई. (1964), मॉडर्न पॉलिटिकल सिस्टमस्, प्रेंटिस हॉल, न्यू जरसी।

रे, एस.एन. (1999). मॉडर्न कम्पेरेटिव पॉलिटिक्स. प्रेंटिस हॉल ऑफ इंड़िया प्राइवेट लिमिटिड, नई दिल्ली।

वर्मा. एस.पी. (1975), मॉडर्न पॉलिटिकल थ्योरी. विकास पब्लिशरस्, नई दिल्ली।

यंग, ओरान, आर. (1966), सिस्टम्स् ऑफ पॉलिटिकल साइंस. प्रेंटिस हॉल, एंग्लवुड क्लिफ्स्।

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. प्रणाली दृष्टिकोण प्राथमिक रूप से (अ) प्रणाली की अभिव्यक्ति (ब) प्रणाली के घटकों की संधि–योजन (स) व्यवहार, जिसके माध्यम से प्रणाली स्वयं को बनाए रखने में सक्षम है, को महत्व देता है।

2. पारंपरिक दृष्टिकोण व्यापक रूप से ऐतिहासिक और वर्णनात्मक हैं। वे निर्देशात्मक और आदर्शवादी भी हैं। उनके पास व्याख्यात्मक शक्ति का अभाव रहता है।

बोध प्रश्न 2

1. सामान्य प्रणालियों के सिद्धांत को सामाजिक विज्ञान में शायद ही कभी लागू किया गया हो जबकि प्रणाली सिद्धांत को सफलतापूर्वक लागू किया गया है (ब) सामान्य प्रणाली सिद्धांत, जिसे प्राकृतिक विज्ञान(विशेषरूप से जीव विज्ञान) के रूप में विकसित किया गया, वो प्रणाली से कमोबेश अंदर से जैविक रूप से एकीकृत जैसा बर्ताव करता है जबकि प्रणाली सिद्धांत प्रणाली के तत्वों के अंतःक्रियात्मक पहलू को महत्व देता है।

2. प्रणाली दृष्टिकोण की विशेषताएँ : (अ) इसने सामाजिक घटनाओं को एक इकाई के रूप में देखा, (ब) इसने प्रणाली को विभिन्न तत्वों के बीच बातचीत को वर्ग के रूप में माना।

बोध प्रश्न 3

1. ईस्टन के आगत–निर्गत सिद्धांत ने तुलनात्मक राजनीति के लिए एक उत्कृष्ट तकनीक प्रदान की। इसका महत्व यह है कि इसने अवधारणाओं और श्रेणियों का एक समूह प्रदान किया जिसने प्रणाली को अधिक स्पष्ट रूप से समझने में मदद की।

2. इसका व्यवहारिक दृष्टिकोण समाज और व्यक्तियों को मशीनों के समान मानता है। इसके अतिरिक्त, इसकी चिंता का विषय, इसके संचार की गुणवत्ता के बजाय मात्रा राजनीतिक घटनाओं को समझने के लिए एक चुनौती बन गया है।